भारत के असली राष्ट्रवादी

पंकज कुमार

आंध्रप्रदेश में हिंदुओं में अपनी सगी भाँजी से विवाह किया जा सकता है. चचेरी और ममेरी बहन से भी विवाह संभव है. मेरे लिए ऐसा कुछ अकल्पनीय है.

नॉर्थ सिक्किम बेहद खूबसूरत जगह है. 9000 फुट से अधिक ऊंचाई पर याक खूब दिखते हैं. याक मुझे बहुत प्रिय है. ये याक झुंड में जब हमारी कार की तरफ़ देख रहे थे तो आगे बढ़ने की इच्छा ही नहीं हो रही थी. सिक्किम के लोगों को याक का मांस बहुत पसंद है और कुछ हिस्सों में मज़बूरी भी है. रास्ते में चलते-चलते याक का शिकार होता हुआ दिखा और हम सारे दोस्त सिहर गये!

कर्नाटक में छोटे छोटे रेस्टोरेन्ट में और सड़क किनारे पड़ने वाले ग्रामीण ढाबों में पोर्क खूब मिलता है. उन इलाकों में नहीं मिलता जहाँ सॉफ्टवेयर इंजीनियर की संख्या ज्यादा होती है. मेरी परवरिश ऐसी हुई है कि मेरी पोर्क के नाम से खाने की इच्छा खत्म हो जाती है.

केरल में बीफ़ कॉमन है. हिन्दू/मुसलमान/ईसाई सब प्रेम से खाते हैं. बड़े रेस्टोरेंट में हर तरह का मीट मिलता है. मैंने केरल प्रवास के दौरान शुरू के तीन महीने नॉनवेज इसी कारण से नहीं खाया था.

पश्चिम बंगाल में बाहरी लोगों से सीधा पूछ लिया जाता है कि देश कौन-सा है तुम्हारा ? बिहार से बंगाल के रास्ते में मालदह पार कर जाने पर बीफ़ की दुकान सड़क किनारे दिख जाती है. हाँ देश पूछने पर और सड़क किनारे बीफ़ दिखने पर मैं असहज हुआ था.

तमिलनाडु के कुछ हिस्से में लड़कियों के पीरियड शुरू होने पर बड़े-बड़े होर्डिंग लगाये जाते हैं और पूरे गाँव-समाज को भोज खिलाया जाता है. मुझे पहली बार सुनकर अरुचि महसूस हुई थी.

मेरे गाँव में दिवाली के अगले दिन सुकरतिया नाम के पर्व में, टोले भर के भैंस मिल कर एक निरीह सुअर को फुटबॉल की तरह खेलते हैं, जब तक कि वो मर नहीं जाता. मुझे गुस्सा आया था पहली बार देख कर.

ऐसे अनेक उदाहरण हैं मेरे पास, ये समझने के लिये कि इस देश में तमाम लोग हैं जिनकी मान्यता मेरे से बिल्कुल अलग है. जो मेरे से जुदा सोचते हैं. जिनका स्वाद मेरे से अलग है. और मैं इन सब के साथ बड़ी आसानी से समझ जाता हूँ कि मुझे सबके साथ रहना है, उनकी मान्यताओं को सम्मान देते हुए, ज़रूरत पड़ने पर शामिल होने में बस अपनी अनिच्छा दर्ज करानी है.

आंध्रप्रदेश के कई दोस्त हैं जिनके साथ बेहतरीन जगहों पर घूमने गया हूँ. आन्ध्र खाना मेरा पसंदीदा है. केरल और बंगलोर में अधिकांशत आंध्रा मेस में ही खाता था. मुंबई में आंध्रा मेस कम हैं और काफी दूर भी हैं, लेकिन कभी-कभी हो ही आता हूँ, सौ रुपये की थाली के लिए भाड़े में हज़ार रुपए ख़र्चता हूँ.

सिक्किम के लोग मुझे पूरे भारत में सबसे अच्छे लगे. जिदादिल, ईमानदार, शांत! याक या बीफ़ खाने के कारण ये थोड़े भी ख़राब इंसान न हो पाये, जैसे मैं मुर्गा दबा कर खाने के बाद भी सिक्किम के महात्मा गांधी रोड पर ली गयी तस्वीर में, गाँधी की प्रतिमा के साथ अनफिट नहीं होता.

कर्नाटक में पहली नौकरी मिली. खूब सारा प्यार मिला. लोग मिले ऐसे, जो मुझे कम्फ़र्टेबल करने के लिए टूटी-फूटी हिंदी में बतियाते थे. थोड़ा भी परायापन न मिला.

केरल में ज़िदादिल दोस्त मिले. दारू की पार्टी में खूब गया, पिया नही और बिल दिया. दोस्त ऐसे जो मेरे प्रजेंस के बिना, दारू पीने को तैयार नहीं. ज्यादातर दोस्त ईसाई और मुसलमान, लेकिन मेरे कम्फ़र्ट को ध्यान में रख कर चिकन छोड़, कभी कुछ और ऑर्डर न हुआ.(अभी मुझे वो कम्फ़र्ट अपना स्वार्थ लगता है)

एक दीदी मिली जो मुसलमान हैं, और राखी पर टीका लगाने के लिए कुछ न मिलने पर, मेरे माथे पर लिपस्टिक से टीका करती थी. शानदार छात्र मिले और मिला एक बिहारी को पूरे मलयाली कम्युनिटी का भरपूर प्यार.

तामिलनाडु की मेरी दोस्त के बिना, मुंबई का तीन साल बेकार गुज़रता. मुम्बई और आसपास का हर हिस्सा हमने साथ देखा. खूब हँसे, खूब घूमे, खूब खाए. एक-दूसरे की समस्याओं को सुलझाया भी, एक-दूसरे के साथ रोये भी और रो चुकने के बाद चिढ़ाया भी खूब. कभी भी तमिल और बिहारी न हुए.

पश्चिम बंगाल में पढ़ाई की. बंगाल में चार साल हिंदी बोलते गुज़ार दिये और दोस्तों ने उफ़ तक न की. यहाँ भी खूब प्यार मिला. बंगाली मकान मालिक और मेरे अनगिनत शिक्षकों ने मेरी बदमाशी मुस्कुरा कर झेली.

सुअर के भैंसों से शिकार करा कर भी, मेरे गाँव के सारे लोग ख़राब नहीं हो जाते.

लोग बीफ़ खाकर ख़राब नहीं हो जाते, जैसे मैं चिकन खाकर अपने बौद्ध और जैन मित्रों के लिए ख़राब नहीं हो जाता.

लोग संबंधियों में विवाह करके ख़राब नहीं हो जाते, जैसे ब्राह्मण केवल ब्राह्मण से और यादव केवल यादव से शादी कर खराब नहीं हो जाते.

न कोई पोर्क खाने से ख़राब होता है, न कोई शाकाहारी होने से ख़राब होता है.

मुझे बुरा लगता यदि कोई मुझे ज़बरदस्ती मुसलमान, ईसाई, बौद्ध या नास्तिक बनाने का प्रयास करता. मुझे बुरा लगता यदि मुझ पर कोई अपनी मान्यता थोपता!

- देश बुरा हो जायेगा यदि कोई हिस्सा, सबको ज़बरदस्ती अपने जैसा बनाने लगेगा.
- देश बुरा हो जायेगा यदि इसकी विविधता ख़त्म होगी.
- देश बुरा हो जायेगा यदि मुहम्मद अली रोड पर रमज़ान के मौके पर मिलने वाले पकवानों को खाने के लिए उमड़ने वाली भीड़ में हिंदुओं की भारी संख्या कम हो जाये.
- देश बुरा हो जायेगा यदि कोई भी अपने मन का खाने और पहनने को स्वतंत्र न हो.
- देश बुरा हो जायेगा यदि खान-पान और परिवेश में भिन्नता के कारण, एक-दूसरे के दिल में जगह मिलना बंद हो जाये.
- देश बुरा हो जायेगा यदि हमारे बीच विविधता की रंग-बिरंगी खूबसूरत महीन लकीरों को, कोई चौड़ी खाई में बदलने की जिद करने लगे!

इतिहास को गौरवशाली करने में हमारा बस इतना-सा योगदान हो कि हम अपने वर्तमान को, सबके लिए खुशहाल बनाने का प्रयास करें.

अय्याशी में डूबे जनप्रतिनिधि : आँख फाड़ देने वाला सच, आप भी आश्चर्यचकित रह जायेंगे ?

भारत में कुल 4120 एमएलए और 462 एमएलसी हैं अर्थात कुल 4,582 विधायक।

प्रति विधायक वेतन भत्ता मिला कर प्रति माह 2 लाख का खर्च होता है। अर्थात 91 करोड़ 64 लाख रुपया प्रति माह। इस हिसाब से प्रति वर्ष लगभ 1100 करोड़ रुपये।

भारत में लोकसभा और राज्यसभा को मिलाकर कुल 776 सांसद हैं। इन सांसदों को वेतन भत्ता मिला कर प्रति माह 5 लाख दिया जाता है।

अर्थात कुल सांसदों का वेतन प्रति माह 38 करोड़ 80 लाख है। और हर वर्ष इन सांसदों को 465 करोड़ 60 लाख रुपया वेतन भत्ता में दिया जाता है।

अर्थात भारत के विधायकों और सांसदों के पीछे भारत का प्रति वर्ष 15 अरब 65 करो ? 60 लाख रूपये खर्च होता है।

ये तो सिर्फ इनके मूल वेतन भत्ते की बात हुई। इनके आवास, रहने, खाने, यात्रा भत्ता, इलाज, विदेशी सैर सपाटा आदि का का खर्च भी लगभग इतना ही है।

अर्थात लगभग 30 अरब रूपये खर्च होता है इन विधायकों और सांसदों पर।

अब गौर कीजिए इनके सुरक्षा में तैनात सुरक्षाकर्मियों के वेतन पर।

एक विधायक को दो बॉडीगार्ड और एक सेक्शन हाउस गार्ड यानी कम से कम 5 पुलिसकर्मी और यानी कुल 7 पुलिसकर्मी की सुरक्षा मिलती है।

7 पुलिस का वेतन लगभग (25,000 रूपये प्रति माह की दर से) 1 लाख 75 हजार रूपये होता है।

इस हिसाब से 4582 विधायकों की सुरक्षा का सालाना खर्च 9 अरब 62 करो ? 22 लाख प्रति वर्ष है।

इसी प्रकार सांसदों के सुरक्षा पर प्रति वर्ष 164 करोड़ रुपये खर्च होते हैं।

तमाम श्रेणी की सुरक्षा प्राप्त नेता, मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों, प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए लगभग 16000 जवान अलग से तैनात हैं।

जिन पर सालाना कुल खर्च लगभग 776 करोड़ रुपया बैठता है।

इस प्रकार सत्ताधीन नेताओं की सुरक्षा पर हर वर्ष लगभग 20 अरब रूपये खर्च होते हैं।

'अर्थात हर वर्ष नेताओं पर कम से कम 50 अरब रूपये खर्च होते हैं।'

इन खर्चों में राज्यपाल, भूतपूर्व नेताओं के पेंशन, पार्टी के नेता, पार्टी अध्यक्ष , उनकी सुरक्षा आदि का खर्च शामिल नहीं है।

यदि उसे भी जोड़ा जाए तो कुल खर्च लगभग 100 अरब रुपया हो जायेगा।

अब सोचिये हम प्रति वर्ष नेताओं पर 100 अरब रूपये से भी अधिक खर्च करते हैं, बदले में गरीब लोगों को क्या मिलता है ?

क्या यही है लोकतंत्र ?

(यह 100 अरब रुपया हम भारत वासियों से ही टैक्स के रूप में वसूला गया होता है।)

- एक सर्जिकल स्ट्राइक यहाँ भी बनती है
- भारत में दो कानून अवश्य बनना चाहिए
- पहला - चुनाव प्रचार पर प्रतिबंध नेता केवल टेलीविजन (टी वी) के माध्यम से प्रचार करें
- दूसरा - नेताओं के वेतन भत्तो पर प्रतिबंध तब दिखाओ देशभक्ति।

= प्रत्येक भारतवासी को जागरूक होना ही पड़ेगा और इस फिजूल खर्ची के खिलाफ बोलना पड़ेगा ?

'इस मेसेज को जितना हो सके फेसबुक और व्हाट्सअप ग्रुप में फॉरवर्ड कर अपनी देश भक्ति का परिचय दें।

सादर निवेदन
माननीय PM and गुरूजी,
कृपया सारी योजना बंद कर दीजिये।
सिर्फ 'सांसद भवन जैसी कैन्टीन हर दस किलोमीटर पर खुलवा दीजिये ।'

सारे लफड़े खत्म।
'29 रूपये में भरपेट खाना मिलेगा'
80 प्रतिशत लोगों को घर चलाने का लफड़ा खत्म।
'ना सिलेंडर लाना, ना राशन'
और
घर वाली भी खुश ।
'चारों तरफ खुशियाँ ही रहेगी।'

फिर हम कहेंगे सबका साथ सबका विकास ।

'सबसे बड़ा फायदा 1 'किलो गेहूँ नहीं देना पड़ेगा' और

कृपया कड़ी मेहनत से प्राप्त हुई ये जानकारी देश के हर एक नागरिक तक पहुँचाने की कोशिश करे ।

शान है या छलावा...।

पूरे भारत में एक ही जगह ऐसी है जहाँ खाने की चीजें सबसे सस्ती है ।

चाय = 1.00
सुप = 5.50
दाल= 1.50
खाना =2.00
चपाती =1.00
चिकन= 24.50
डोसा = 4.00
मच्छी= 13.00

ये सब चीजें सिर्फ गरीबों के लिए है और उन गरीबों की पगार है 80,000 रुपये महीना वो भी बिना इन्कमटैक्स के ।

यह सप्ताह / वैज्ञानिक समझ

हिमांशु कुमार

अगर भगवान् के एक भक्त को और एक नास्तिक को किसी गहरी नदी में फेंक दिया जाय,

तो वही जिंदा बचेगा जिसे तैरना आता है,

अगर इन दोनों में से एक हिन्दू और एक मुसलमान हो तो भी वही जिंदा बचेगा जिसे तैरना आता है,

अल्लाह और ईश्वर अपने नियम को नहीं तोड़ता,

अल्लाह और ईश्वर का अपना कोई धर्म या मजहब नहीं है,

यानी वह ना हिन्दू है ना मुसलमान,

अगर कोई आपको ऐसा बता रहा है कि सिर्फ आपके अल्लाह या आपके ईश्वर में यकीन करने वाले को जन्नत या स्वर्ग मिलेगा तो आपको ऐसा बताने वाला आपको बेवकूफ बना रहा है,

मैं भी पहले पूजा पाठ करता था,

तब मैं काफी डरा हुआ और अपने दिमाग में अँधेरा महसूस करता था,

जब से मैंने साइंस और तर्क के आधार पर सोचना शुरू किया,

मन से ईश्वर का डर खत्म होने लगा, सभी सवालों के जवाब मिलने लगे, दिमाग के अँधेरे खत्म होने लगे,

अब मैं बहुत खुश और सुलझा हुआ महसूस करता हूँ,

अब मुझे ना किसी धर्म वाले से नफरत होती है ना किसी की जाति की वजह से उसे छोटा या बड़ा मानता हूँ,

विज्ञान और तर्क के आधार पर सोचने की वजह से मुझे अब सभी इंसान एक जैसे लगने लगे हैं,

अब देशों की सीमाओं के भीतर कुढ़ते हुए, पड़ोसी देश से नफरतों से भरे हुए, दुसरे धर्म वालों को गालियाँ देते हुए, जातिवाद से भरे हुए लोगों को देख कर मुझे बहुत दया आती है,

मुझे महसूस होता है कि यह सब बेचारे बीमार लोग हैं,

अब मैं विज्ञान और तर्क के आधार पर सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि पेड़, नदी, जानवर,पहाड़ और मैं सब एक ही हैं,

अब मैं आसपास की दुनिया और प्रकृति से ज्यादा प्यार महसूस करता हूँ,

सत्य जानना ही इंसान का धर्म है,

विज्ञान और तर्क ही सत्य को जानने का तरीका है,

जो लोग यह माने बैठे हैं कि जिस मजहब और धर्म में जन्म हो गया वही सबसे अच्छा और सच्चा है, वह सबसे नासमझ लोग हैं,

यकीन मानिए जब तक हम इन पुराने अंधे विश्वासों से आज़ाद नहीं होंगे ना युद्ध बंद होंगे, ना शांति आयेगी, ना नफरतें खत्म होंगी।

महूर्त वाले सिजेरियन

- डॉक्टर साहब अभी मूल लगे हैं कल डिलीवरी करवाएंगे ।
- अभी पंचक लगे हैं .. बच्चा 3 से साढ़े चार के बीच होना चाहिए।
- समय नहीं हुआ तो क्या ? आप सीजेरियन कर दीजिए .. या कहीं और जाएं ?

भोपाल जैसे शहर में सालों की प्रैक्टिस में बहुत से ऐसे ऑपरेशन करवाए जिनमें बच्चा कब होगा, ये मरीज के पति, सास ससुर बताते थे ।

ऑपरेशन थियेटर में डॉक्टर की नजर घड़ी की ओर .. महूर्त के हिसाब से बच्चे का जन्म ।

पर इन दिनों कस्बे में तक ये चलन भयावह रूप से बढ़ रहा है कि इतने बजे से इतने बजे के बीच ऑपरेशन कीजिये डॉक्टर साहब .. महूर्त है ।

इसी पिपरिया में .. यहीं का एक केस है कि एक प्रसूता के 9 माह 11 दिन हो गए थे .. ऑपरेशन की सलाह दी थी निष्ठा ने जो उसने नहीं मानी कि मूल लगे हैं ।

बाद में 9 माह के ऊपर 19 वें दिन जब ऑपरेशन किया .. बच्चा ही मरा भर न था बल्कि.. उसके हाथ पांव तक गलने शुरू हो चुके थे और प्रसुता को बामुश्किल बचाया जा सका ।

ये महूर्त .. पंडित देते हैं .. यहां भी कोई पंडित है या दो तीन जिसके ऐसे अनुयायी बढ़ते ही जा रहे हैं ..

कभी कभी सोचता हूँ .. लोग .. कहां जा रहे हैं ? क्या होते जा रहे हैं अब ? यूँ ही चलते चलते क्या भक्तिकाल तक लौटना है इस देश को ?

मैं तो थक गया समझा समझाकर भई पर फिर भी आज ये परिचर्चा फिर भी की किसी के काम आए शायद क्योंकि इस महूर्त और मूल के फेर में मरकर गल चला वो बच्चा आज भी आंखों के सामने घूमता है जब कोई महूर्त की शर्त वाला मरीज देखता झेलता हूँ .. बहुत कुछ कहने की इच्छा के बावजूद अब कहा नहीं जाता। कुछ ऐसे अंधभक्ति और अंधभक्तों के खिलाफ क्या कीजे ? ??

- देवेंद्र सुरजन